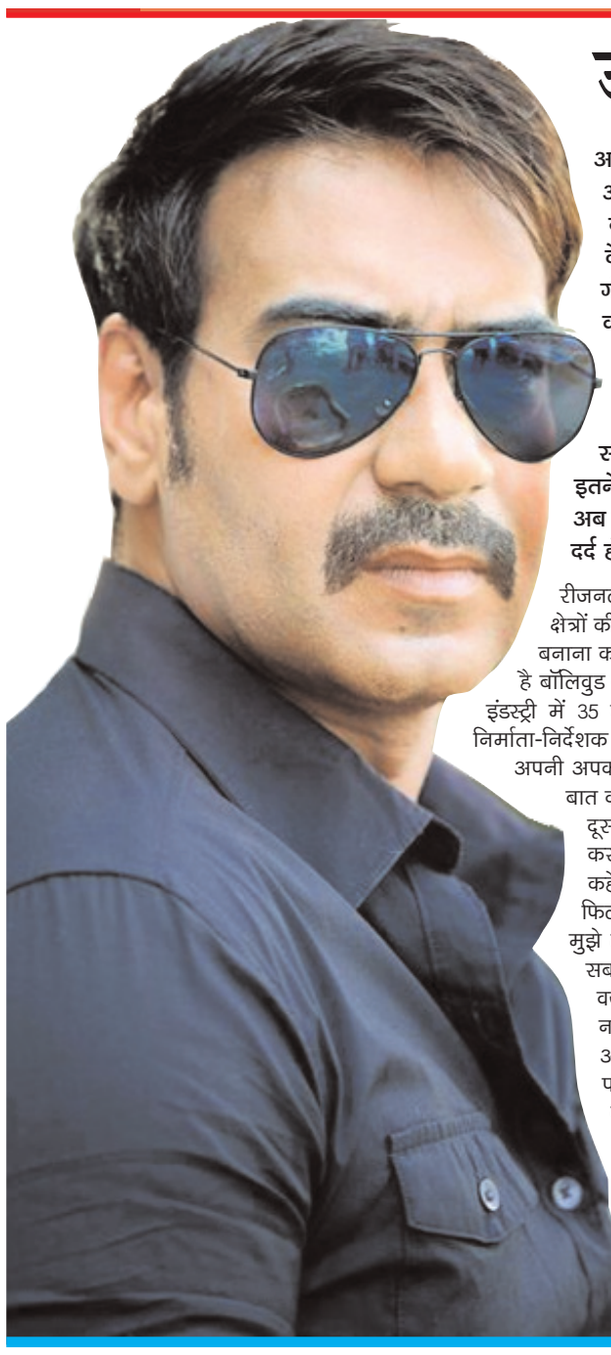
3 OCT 12 2026.qxd 02-10-2026 22:17 Page 1

उम्रका असर है, हड्डियोंमें अब होता है दर्द-अजय देवगन



अजय देवगन इस वक्त अपनी अपकमिंग फिल्म दृश्यम 3 को लेकर चर्चा में हैं। अजय देवगन ने कहा- चाहे गोलमाल हो या दृश्यम हो, वहां विजय सलगांवकर या गोपाल या सिंघम चला है, लोग इन किरदारों से जुड़ते हैं, तभी आप सीक्वल बना सकते हैं। उन्होंने कहा है- मैंने इतने स्टंट किए हैं उसका असर अब नजर आता है, हड्डियां अब दर्द होती हैं।

रीजनल सिनेमा हो या हॉलिवुड, बाकी क्षेत्रों की फिल्मों के मुकाबले हिंदी फिल्में बनाना कहीं ज्यादा मुश्किल है। यह कहना है बॉलिवुड के सुपरस्टार अजय देवगन का। इंडस्ट्री में 35 साल लंबा सफर तय कर चुके निर्माता-निर्देशक अजय देवगन फिक्की फ्रेम्स में अपनी अपकमिंग फिल्म दृश्यम 3 को लेकर बात कर रहे थे। उन्होंने कहा, मैं किसी दूसरे सिनेमा का क्रेडिट कम नहीं कर रहा। आप पारंपरिक सिनेमा कहें या इंटरनैशनल, हर जगह फिल्म बनाना मुश्किल काम है, पर मुझे लगता है कि हिंदी फिल्म बनाना सबसे मुश्किल है। इसकी सबसे बड़ी वजह यह है कि आपको पता ही नहीं होता कि आपकी टारगेट ऑडियंस कौन है। जब आप पंजाबी, तेलुगु या तमिल फिल्म बनाते हैं, तो आपको अपना दर्शक वर्ग पता होता है, क्योंकि वह एक खास जगह के लिए बनाई जा रही है। आपको वहां के दर्शकों की नब्ज पता होती है तो आप उसी हिसाब से फिल्म बनाते हैं। जबकि, हिंदी में हर 80-90 किमी के बाद भाषा बदल जाती है, लोग की सोच बदल जाती है। यहां मास और क्लास का फर्क है। शहरी दर्शक, छोटे शहरों के दर्शक, सबअर्ब्स के दर्शक, तो होता क्या है कि एक वर्ग के दर्शकों को फिल्म पसंद आती है, तो दूसरे को नहीं आती, जिससे बिजनेस उतना बड़ा नहीं हो पाता। यहां हमें हर किसी को टारगेट करना पड़ता है, इसलिए मुझे लगता है कि हिंदी फिल्म लिखना और बनाना सबसे मुश्किल काम है।

> किरदार वही है, लेकिन उसे निभाने का तरीका थोड़ा अलग महसूस हो सकता है। पर यहां मैं कहना चाहूंगा कि बेशक चेहरे से उम्र का पता नहीं चलता लेकिन जब आप सुबह सोकर उठते हैं हड्डियां दर्द होती हैं तो उम्र का पता चलता है। पहले जो मैंने इतने स्टंट किये हैं उसका असर अब नजर आता है।

यहां दृश्यम के सीक्वल की सफलता पर बात करते हुएअजय देवगन ने कहा, मेरा मानना है कि सीक्वल नहीं किरदार चलते हैं। आप किसी भी सीक्वल को उठाकर देख लो, वो चाहे गोलमाल हो या दृश्यम हो, वहां विजय सलगांवकर या गोपाल या सिंघम चला है। जब लोग इन किरदारों से जुड़ते हैं, तभी आप सीक्वल बना सकते हैं। आप किसी फिल्म का सीक्वल सिर्फ इसलिए सीक्वल नहीं बना सकते क्योंकि वह बहुत कमाल की थी और लोगों ने उसे खूब पसंद किया। लोगों को उन किरदारों से प्यार होना चाहिए। क्या इतने लंबे समय तक एक किरदार को बार-बार निभाते हुए अजय उनसे अटैचमेंट भी महसूस करते हैं? इस सवाल पर उनका कहना था, नहीं, मैं किरदार के साथ अटैच नहीं होता हूं। हां, आप उस किरदार को पसंद करने लगते हैं लेकिन अगर ऐक्टर्स अपने किरदारों से अटैच होने लगेंगे तो वे पागल हो जाएंगे। तो आपको पता ही नहीं चलेगा कि आप असल जिंदगी में कौन हैं। आप अपनी असल जिंदगी में भी किरदार ही निभाने लगेंगे। तो आपको उससे डिटैच होना जरूरी है। बदलते वक्त के साथ खुद को री-इन्वेंट करने के सवाल पर उन्होंने कहा, मुझे नहीं लगता कि हम खुद को री-इन्वेंट कर रहे हैं। असल में हम दर्शकों की सोच के साथ बस कदमताल करने की कोशिश कर रहे हैं। कोविड महामारी के बाद हमें यह समझ में आया कि उस दौरान जब दर्शक घरों में बैठे थे, उन्होंने इंटरनैशनल और हर भाषा का भारतीय सिनेमा खूब देखा। फिर जब चीजें सामान्य हुईं और हमने दोबारा फिल्में रिलीज करनी शुरू कीं तो हमें अहसास हुआ कि दर्शक हमसे काफी आगे निकल चुके हैं और अब हमें उनके साथ कदम मिलाने की जरूरत है। हम वही कोशिश कर रहे हैं और दर्शक जिस तेजी से बदल रहे हैं, उनके साथ कदम मिलाना मुश्किल है। वे लगातार आगे बढ़ रहे हैं। इसलिए हमें लगातार सुधार करना होगा, सीखना होगा और अपनी सीमाओं को आगे बढ़ाना होगा, क्योंकि दर्शक हमसे ज्यादा समझदार हैं। हम उन्हें बेवकूफ नहीं बना सकते। अजय देवगन की चर्चित फ्रेंचाइजी दृश्यम की तीसरी और आखिरी कड़ी जल्द आने वाली है। अजय ने बताया कि यह हिंदी फिल्म मलयालम सिनेमा के दिग्गज मोहनलाल स्टारर फिल्म से बिल्कुल अलग है। यह पूरी नई कहानी है। मुझे भले ही एक्शन फिल्मों के लिए जाना जाता रहा हो। इस फिल्म में भले ही मैंने एक्शन ना किया हो लेकिन उम्र के साथ एक ठहराव और आत्मविश्वास आया है। इसलिए किरदार वही है, लेकिन उसे निभाने का तरीका थोड़ा अलग महसूस हो सकता है। पर यहां मैं कहना चाहूंगा कि बेशक चेहरे से उम्र का पता नहीं चलता लेकिन जब आप जब सुबह सोकर उठते हैं हड्डियां दर्द होती हैं तो उम्र का पता चलता है। पहले जो मैंने इतने स्टंट किए हैं उसका असर अब नजर आता है।





इच्छा, दुःख और लाभ से मुक्ति

गुरुदेव श्री श्री रवि शंकर

सुख, दुःख, इच्छा और लाभ -ये केवल बाह्य परिस्थितियाँ नहीं, वरन मानवीय मन के आंतरिक रुझान और वृत्तियाँ हैं। जीवन की वास्तविक साधना इन चारों वृत्तियों के प्रति आसक्ति के परित्याग में निहित है। जब मनुष्य सुख को बलपूर्वक पकड़ने की चेष्टा करता है, तब वही सुख दुःख में परिणत हो जाता है। अतः सुख की चाह का त्याग ही श्रेयस्कर है, जिससे दुःख स्वतः लुप्त हो जाता है। दुःख के आगमन पर विचलित हुए बिना, त्याग और समर्पण के माध्यम से उससे दूरी बनाना ही स्वाभाविक मार्ग है। मानव मन की एक विकृति यह भी है कि वह दुःख में भी एक प्रकार के विकृत रस का अनुभव करने लगता है। लोग चिकित्सकों द्वारा किसी गंभीर व्याधि की घोषणा पर आंतरिक संतुष्टि का अनुभव करते हैं अथवा चलचित्रों में दुखांत दृश्यों को देखकर आनंद पाते हैं। अतः दुःख का भी समूल त्याग आवश्यक है। इच्छा का निरंतर चिंतन मन में एक ज्वर उत्पन्न करता है, जो वर्तमान के आनंद को नष्ट कर देता है। इच्छा भविष्य का छलावा है, जबकि आनंद वर्तमान की स्थिति है। सांसारिक गृहस्थों हेतु इच्छाओं का दमन करने के स्थान पर, उन्हें ईश्वर या गुरु के चरणों में समर्पित कर देना ही मन को शांत करने का उपाय है। समर्पण से ही इच्छाओं की तृप्ति और मन की स्थिरता संभव है। लाभ का निरंतर चिंतन मनुष्य को लोभी और जड़ बनाकर प्रसन्नता से वंचित कर देता है। लाभ के त्याग का अर्थ व्यापार में स्वेच्छा से हानि उठाना नहीं, अपितु लोभ के मानसिक ज्वर से मुक्त होकर धर्म और बुद्धिमानी से व्यवहार चलाना है, क्योंकि यह नश्वर शरीर अंततः मिट्टी में विलीन होने वाला है। आध्यात्मिक प्रगति में काले प्रतीक्षमाणे अर्थात् धैर्यपूर्वक काल की प्रतीक्षा का विशेष महत्त्व है। किसी शिक्षक या गुरु द्वारा निर्दिष्ट नियमों और विधियों का धैर्य पूर्वक अभ्यास किया जाना चाहिए। चेतना में निष्कपट विश्वास होना चाहिए। जीवंत प्रतीक्षा मन की जड़ता को नष्ट कर देती है। प्रतीक्षा के सिद्धांत का पालन करते हुए, हमें अपने जीवन को व्यर्थ के कार्यों में नहीं गंवाना चाहिए। एक सच्चा प्रेमी और साधक सदैव उपयोगी कर्मों में लीन रहकर संपूर्ण वातावरण को शांति, सामरस्य और प्रेम के परमाणुओं से शुद्ध करता है, जिससे समाज में व्याप्त क्रोध और दुःख की ऊर्जा स्वतः विलीन होने लगती है।

आध्यात्मिक प्रगति में काले प्रतीक्षमाणे अर्थात् धैर्यपूर्वक काल की प्रतीक्षा का विशेष महत्त्व है। किसी शिक्षक या गुरु द्वारा निर्दिष्ट नियमों और विधियों का धैर्य पूर्वक अभ्यास किया जाना चाहिए। चेतना में निष्कपट विश्वास होना चाहिए। जीवंत प्रतीक्षा मन की जड़ता को नष्ट कर देती है। प्रतीक्षा के सिद्धांत का पालन करते हुए, हमें अपने जीवन को व्यर्थ के कार्यों में नहीं गंवाना चाहिए। एक सच्चा प्रेमी और साधक सदैव उपयोगी कर्मों में लीन रहकर संपूर्ण वातावरण को शांति, सामरस्य और प्रेम के परमाणुओं से शुद्ध करता है, जिससे समाज में व्याप्त क्रोध और दुःख की ऊर्जा स्वतः विलीन होने लगती है।

फिल्म नयी नवेली कामेडी, रहस्य, फैंटेसी और एक्शनका जबरदस्त मेल- यामी गौतम

मेकर्स ने अभिनेत्री यामी गौतम की आगामी फिल्म नई नवेली का ट्रेलर आज जारी कर दिया है, जिसके बाद फैंस की एक्साइटमेंट और बढ़ गई है। जानिए कैसा है फिल्म का ट्रेलर। फिल्म में यामी गौतम धर एक बिल्कुल अलग और अनदेखे अंदाज में नजर आने वाली हैं। ट्रेलर की शुरुआत एक शादी से होती है। परिवार वालों को लगता है कि उनके घर में एक साधारण बहू आई है। लेकिन आगे चलकर धीरे-धीरे नए-नए रहस्य सामने आने लगते हैं।

> शादी की रस्में, परिवार के सदस्यों की नोक-झोंक और अलग-अलग तरह के किरदार कहानी को मजेदार बनाते हैं। लेकिन जैसे-जैसे कहानी आगे बढ़ती है, परिवार के बीच छिपे कई राज सामने आने लगते हैं।



परिवार के एक सदस्य को लगता है कि भाभी डायन है, लेकिन शुरुआत में कोई नहीं मानता। धीरे-धीरे बहू का असली रूप देखने को मिलता है। हालांकि ट्रेलर से फिल्म की कहानी पूरी तरह समझ नहीं आती है, क्योंकि ट्रेलर के आखिरी में रावण का भी जिक्र होता है और एक्शन सीन्स भी नजर आते हैं। 'नई नवेली' में यामी गौतम मोहिनी का किरदार निभा रही हैं। फिल्म की कहानी मेरठ की पृष्ठभूमि पर आधारित है। ट्रेलर की शुरुआत एक आम भारतीय परिवार और उसकी नई बहू से होती है। शादी की रस्में, परिवार के सदस्यों की नोक-झोंक और अलग-अलग तरह के किरदार कहानी को मजेदार बनाते हैं। लेकिन जैसे-जैसे कहानी आगे बढ़ती है, परिवार के बीच छिपे कई राज सामने आने लगते हैं। फिल्म में 'भाभी डायन है' वाला रहस्य भी कहानी का अहम हिस्सा है। हालांकि, ट्रेलर को देखकर साफ है कि मामला सिर्फ एक डायन तक सीमित नहीं है। कहानी धीरे-धीरे एक ऐसी दुनिया में पहुंचती है, जहां कॉमेडी, रहस्य, फैंटेसी और एक्शन का जबरदस्त मेल देखने को मिलेगा। फिल्म का निर्देशन बालाजी मोहन ने किया है। इसकी कहानी हिमांशु शर्मा और दिव्य निधि शर्मा ने लिखी है। आनंद एल. राय और हिमांशु शर्मा फिल्म के निर्माता हैं। फिल्म का संगीत जी.वी. प्रकाश कुमार ने दिया है। 'नई नवेली' 16 अक्टूबर 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली है।

रिस्क लेकर यहां तक पहुंचा हूं- आयुष्मान खुराना



आयुष्मान खुराना आज बॉलीवुड के उन एक्टर्स में गिने जाते हैं, जिन्होंने अपनी अलग तरह की फिल्मों से इंडस्ट्री में पहचान बनाई। लेकिन इस मुकाम तक पहुंचने का सफर आसान नहीं था। चंडीगढ़ से निकले आयुष्मान ने थिएटर किया, रेडियो जॉकी बने, एमटीवी पर वीजे रहे और कई ऑडिशन दिए। उन्हें इंडियन आइडल-2 में भी रिजेक्शन मिला। 2012 में 'विक्की डोनर' से फिल्मी करियर शुरू हुआ। पहली फिल्म हिट हुई। इसके बाद लगातार तीन फिल्में नहीं चलीं। फिर 'दम लगा के हईशा' से करियर ने दोबारा रफ्तार पकड़ी। इसके बाद 'बरेली की बर्फी', 'शुभ मंगल सावधान', 'अंधाधुन', 'बधाई हो', 'आर्टिकल 15', 'ड्रीम गर्ल' और 'बाला' जैसी फिल्मों ने उन्हें अलग पहचान दिलाई। आयुष्मान खुराना का जन्म 14 सितंबर 1984 को चंडीगढ़ में हुआ। उनकी शुरुआती पढ़ाई चंडीगढ़ के सेंट जॉन्स हाई स्कूल से हुई। इसके बाद उन्होंने डीएवी कॉलेज, चंडीगढ़ से इंग्लिश लिटरेचर की पढ़ाई की और पंजाब यूनिवर्सिटी के स्कूल ऑफ कम्युनिकेशन स्टडीज से पत्रकारिता में पोस्ट ग्रेजुएशन किया। उनके पिता पी. खुराना जाने-माने ज्योतिषी थे, जबकि मां पूनम खुराना ने हिंदी में एमए किया था। परिवार का माहौल पढ़ाई, साहित्य और कला से जुड़ा रहा। आयुष्मान ने कॉलेज के दिनों में थिएटर किया और दो थिएटर ग्रुप भी बनाए। एक्टिंग की दुनिया में आने से पहले आयुष्मान ने डॉक्टर बनने का सपना देखा था। उन्होंने 11वीं में साइंस ली थी और कर्नाटक के एक डेंटल कॉलेज में उन्हें सीट भी मिल गई थी। लेकिन तभी उनका रुझान थिएटर की तरफ बढ़ा। उन्होंने मेडिकल की पढ़ाई छोड़कर आर्ट्स और थिएटर चुना। डीएवी कॉलेज में उन्होंने थिएटर ग्रुप बनाए और स्ट्रीट प्ले किए। थिएटर में काम करते हुए आयुष्मान ने सामाजिक मुद्दों को समझा। यही अनुभव आगे चलकर उनकी फिल्मों के विषयों में भी दिखाई दिया। 2004 में आयुष्मान ने एमटीवी रोडीज सीजन-2 जीता। इसके बाद उन्हें पहचान मिलने लगी, लेकिन उन्होंने तुरंत मुंबई जाकर फिल्मों में किस्मत नहीं आजमाई। पोस्ट ग्रेजुएशन के दौरान उन्होंने रेडियो में काम शुरू किया। बाद में वे एमटीवी के वीजे बने और कई शो होस्ट किए। फिल्मों में आने से पहले आयुष्मान ने अमिताभ बच्चन, शाहरुख खान जैसे सितारों का इंटरव्यू भी लिया था। फिल्मफेयर को दिए इंटरव्यू में उन्होंने बताया था कि इन सितारों से बातचीत ने उन्हें समझने में मदद की कि स्टार भी आम इंसानों की तरह होते हैं।'विक्की डोनर' के बाद आयुष्मान की 'नौटंकी साला!','बेवकूफियां' और 'हवाईजादा' बॉक्स ऑफिस पर उम्मीद के मुताबिक प्रदर्शन नहीं कर पाईं। खुद आयुष्मान ने माना कि 'विक्की डोनर% के बाद वह काफी कन्फ्यूज थे। उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि किस तरह की फिल्में करनी चाहिए। उन्होंने बाद में बताया कि तीन लगातार फिल्मों के अच्छा प्रदर्शन नहीं करने के बाद उनका नजरिया बदला।

> **कभी रेडियो जॉकी और टीवी होस्ट रहे आयुष्मान ने रिजेक्शन और उतार-चढ़ाव के बावजूद जोखिम उठाए और अपनी प्रतिभा से बॉलीवुड में खास मुकाम बनाया।**

फिल्म 'हनुमान अंश' के पार्ट २ की तैयारी

महज डेढ़ करोड़ रुपए से कुछ ज्यादा के बजट में बनी 'हनुमान अंश' ने जिस तरह दर्शकों के बीच अपनी जगह बनाई, उसने फिल्म की अगली कड़ी की संभावनाओं को लेकर भी उत्सुकता बढ़ा दी है। बातचीत में फिल्म की निर्माता अनुप्रिया नागर ने बताया कि इसे आगे ले जाने का विचार सफलता मिलने के बाद पैदा नहीं हुआ, बल्कि फिल्म शुरू करने से पहले ही इसे एक फ्रेंचाइजी के रूप में विकसित करने की योजना थी। यहां तक कि शुरुआती स्तर पर तीन फिल्मों के बारे में सोचा गया था। हालांकि, दूसरे पार्ट की स्क्रिप्टिंग अभी शुरू नहीं हुई है और निर्देशक के दूसरी फिल्म साइन करने के कारण इसमें कुछ समय लग सकता है। इसके बावजूद अनुप्रिया नागर का कहना है कि कहानी और महाराज जी के जीवन से जुड़ी इतनी सामग्री है कि एक फिल्म में सब कुछ समेटना संभव नहीं। फिल्म बनाने से पहले ही हमारे मन में इसे फ्रेंचाइजी के तौर पर विकसित करने की बात थी। महाराज जी की इतनी सारी कहानियां हैं, उनके जीवन से जुड़ी इतनी अद्भुत लीलाएं हैं कि एक फिल्म में सब कुछ बताना संभव नहीं है। इसलिए शुरुआत में ही हमने तीन फिल्मों के बारे में सोचा था। लेकिन अभी मैं यह नहीं कह सकती कि दूसरी फिल्म कब आएगी। फिलहाल हमारा पूरा ध्यान पहली फिल्म को उसका पूरा न्याय देने पर है। हम अभी भी उसके साथ जुड़े काम कर रहे हैं। दूसरी फिल्म का विचार पूरी तरह मौजूद है, लेकिन उसकी राइटिंग अभी शुरू नहीं हुई है।हमारे डायरेक्टर ने एक दूसरी फिल्म साइन कर ली है, इसलिए स्वाभाविक तौर पर थोड़ा समय लगेगा। हमारी टीम ने अभी दूसरी फिल्म को लेकर पूरी तरह बैठकर चर्चा भी नहीं की है। जब तक वह बातचीत नहीं होती, तब तक तारीख बताना सही नहीं होगा। सच कहूं तो मैं भी इंतजार कर रही हूं कि कब महाराज जी बताएंगे कि यह फिल्म कब आएगी। मेरी सोच इस मामले में बहुत स्पष्ट है। मुझे लगता है कि पहली फिल्म जिस बजट में बनी, उसे उसी बजट में बनना चाहिए था। अगर हमने उसमें 10 या 20 करोड़ रुपए लगा दिए होते तो जरूरी नहीं कि फिल्म बेहतर बनती। हम जिस दौर की कहानी कह रहे हैं, उसमें सिर्फ किरदार ही महत्वपूर्ण नहीं हैं। लैंडस्केप, विजुअल टेक्सचर, वातावरण और उस समय की दुनिया भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। इसलिए हमारे लिए सबसे जरूरी चीज ऑथेंटिसिटी है। अगर समाज ने हमें इतना प्यार और सपोर्ट दिया है तो हम फिजूलखर्ची नहीं कर सकते।



शोहरतकी ऊंचाइयों तक पहुंचने वाले दिग्गज एक्टर संजीव कुमार



हिंदी सिनेमा में कुछ सितारे ऐसे रहे हैं, जिनकी अदाकारी ने उन्हें हमेशा के लिए अमर कर दिया. संजीव कुमार उन्हीं नाम में से एक है. कभी पर्दे पर कभी गंभीर तो कभी बेहद सहज अंदाज में नजर आने वाले संजीव कुमार ने अपनी जिंदगी में पैसों की तंगी भी देखी और शोहरत के शिखर तक भी पहुंचे. शुरुआती दिनों में हालात ऐसे थे कि परिवार की जरूरतें पूरी करने के लिए उन्हें जैसी फिल्में मिलती थीं, वे कर लेते थे. लेकिन जब कामयाबी मिली तो ये दिग्गज एक्टर अपने दोस्तों की मदद के लिए बिना हिसाब-किताब के लाखों रुपये देने लगा. असल में वो कंजूस नहीं बल्कि दरियादिल थे.

संजीव कुमार को बॉलीवुड में हरी भाई के नाम से भी जाना जाता था। शोले, आंधी, त्रिशूल, कोशिश और मौसम जैसी फिल्मों में अपनी अदाकारी से उन्होंने खास पहचान बनाई. लेकिन इस मुकाम तक पहुंचने का उनका सफर आसान नहीं था. फिल्म पत्रकार हनीफ जावेरी ने मेरी सहेली पॉडकास्ट पर बातचीत के दौरान संजीव कुमार के शुरुआती स्ट्रगल के बारे में खुलकर बात की. बातचीत में बताया, जब संजीव फिल्मों में काम तलाश रहे थे, तब उनके परिवार की आर्थिक स्थिति बेहद खराब थी। उनकी मां, पिता के घाटे में चल रहे कारोबार को संभाल रही थीं। संजीव के पास पहनने के लिए केवल दो जोड़ी कपड़े थे. ऐसे में परिवार की आर्थिक मदद करने के लिए उन्होंने मिलने वाले काम को करने का फैसला किया। हनीफ ने बताया कि संजीव को शायद यह भी अंदाजा नहीं था कि वे जिन फिल्मों में काम कर रहे हैं, वे सी-ग्रेड श्रेणी की हैं। उस वक्त उनके लिए काम मिलना और पैसे कमाना ज्यादा जरूरी था। संजीव कुमार को लेकर अकसर कहा जाता था कि वे काफी कंजूस थे. लेकिन हनीफ जावेरी ने इस धारणा को गलत बताया। उनके मुताबिक, संजीव ने अपने दोस्तों को करीब 96 लाख रुपये उधार दिए थे, जो उन्हें कभी वापस नहीं मिले।

> संजीव कुमार यानी हरी भाई ने कभी बेहद तंगहाली में भी दिन गुजारे थे। काम की तलाश में उन्हें छोटे बजट की फिल्मों का हिस्सा बनना पड़ा। लेकिन वक्त बदला और संजीव बालीवुड के बड़े सितारों में शामिल हो गया। खास बात ये रही कि दौलत आने के बाद भी उनका दिल छोटा नहीं हुआ। दोस्तों की मदद में उन्होंने लाखों रुपये खर्च किये।

उन्होंने अपने ड्राइवर की शादी का खर्च भी उठाया था और एक दोस्त को कार तक गिफ्ट की थी। उन्होंने बताया इतना ही नहीं, संजीव कुमार ने अपनी वसीयत में ड्राइवर के बेटे की पढ़ाई के लिए भी दो लाख रुपये रखे थे। हनीफ ने कहा कि जो व्यक्ति दूसरों पर इस तरह पैसा खर्च करता हो, उसे कंजूस कहना सही नहीं है. लेकिन संजीव बस फिजूलखर्ची के खिलाफ थे। हनीफ ने बताया कि संजीव कुमार की दोस्ती शत्रुघ्न सिन्हा के साथ बेहद गहरी थी। जब शत्रुघ्न को पैसों की जरूरत पड़ी तो संजीव ने खुद आगे बढ़कर उनकी मदद की. उन्होंने करीब पांच से सात लाख रुपये दिए थे। यह मदद उन्होंने बिना किसी औपचारिक मांग के की थी। इसी तरह, बोनी कपूर को भी जरूरत के वक्त संजीव ने पैसे दिए थे. इस लेन-देन का कोई दस्तावेज नहीं बनाया गया था और संजीव के परिवार को भी इसकी जानकारी नहीं थी। संजीव के निधन के बाद बोनी कपूर ने वह रकम उनके परिवार को लौटा दी। संजीव कुमार की पर्सनल जिंदगी भी काफी चर्चा में रही। उनकी जिंदगी में हेमा मालिनी और नूतन के साथ रिश्तों के किस्से जुड़े रहे। बाद में सुलक्षणा पंडित भी उनसे प्यार करने लगी थीं, हालांकि, हनीफ जावेरी के मुताबिक, संजीव सुलक्षणा को पसंद करते थे, लेकिन उनसे शादी नहीं करना चाहते थे। हनीफ ने बताया कि संजीव को लगता था कि उनकी जिंदगी ज्यादा लंबी नहीं होगी। उनके परिवार में पुरुषों की मौत 50 साल की उम्र से पहले हो गई थी। इसके अलावा, सुलक्षणा से मिलने तक उन्हें दो बार हार्ट अटैक आ चुका था। इसी वजह से उन्हें डर था कि वे भी कम उम्र में दुनिया छोड़ देंगे। वह किसी से शादी करके उसकी जिंदगी दुखों से नहीं भरना चाहते थे। उन्होंने बताया कि यही संजीव की शादी न करने की सबसे बड़ी वजह थी. संजीव कुमार ने 6 नवंबर 1985 को महज 47 साल की उम्र में इस दुनिया को अलविदा कह दिया था। पर्दे पर अपनी हर सांस से किरदारों में जान फूंकने वाले इस अजीम कलाकार की दास्तान सिर्फ शोहरत, कामयाबी और तालियों तक सीमित नहीं थी। उनकी असली जिंदगी संघर्षों के कांटे, रिश्तों की गहराई, बेपनाह दर्द और दिल खोलकर लुटाए गए प्यार की एक ऐसी मिसाल है, जो भारतीय सिनेमा के इतिहास में हमेशा अमर रहेगी।